कुरआन एवं ह़दीस़ से प्रमाणित दुआएँ

लेखक:

डॉक्टर सईद बिन अली बिन वह्फ़ अल-क़ह़तानी

क़ुरआन एवं ह़दीस़ से प्रमाणित दुआएँ

लेखक:

डॉक्टर सईद बिन अली बिन वह्फ़ अल-क़ह़तानी

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

क़ुरआन एवं ह़दीस़ से प्रमाणित दुआएँ

"और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं। अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में परिवर्तन करते हैं। उन्हें शीघ्र ही उनके कुकर्मों का कुफल दे दिया जाएगा।"[1]

अल्लाह प्रथम अंतिम प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष उच्च सर्वोच्चतम अत्यंत उच्च महान श्रेष्ठ बहुत बड़ा सुनने वाला देखने वाला जानने वाला सर्वसूचित अति प्रशंसित प्रभुत्वशाली क्षमतावान सामर्थ्यवान सक्षम शक्तिशाली बलवान निस्पृह तत्वदर्शी सहनशील क्षमी क्षमाशील अत्यंत माफ़ करने वाला अत्यधिक तौबा क़बूल करने वाला निरीक्षक सूचित रक्षक सूक्ष्मदर्शी समीप ग्रहण करने वाला प्रेम करने वाला गुणग्राही आदर करने वाला सय्यद बेनियाज़ (निःस्पृह) प्रभावी अत्यंत प्रभावी प्रभाव वाला हिसाब लेने वाला मार्गदर्शक न्यायकारी अत्यंत पवित्र सर्वथा शांति प्रदान करने वाला परोपकारी बहुत बड़ा दाता बड़ा दयालु अति कृपाशील उदार अत्यंत उदार करुणामय अति न्याय प्रिय निर्णयकारी जीविका दाता बड़ा जीविका दाता जीवित नित्य स्थायी एवं सारे जगत को संभालने वाला रब बादशाह स्वामी एक अकेला बड़ाई वाला सृष्टिकर्ता महान सृष्टिकर्ता रचयिता रूप देने वाला संरक्षक गुप्त बातों और सीनों के भेदों से वाकिफ प्रत्येक वस्तु को घेरे में लेकर रखने वाला सक्षम काम बनाने वाला पर्याप्त विशाल सत्य सुंदर नर्मी वाला (स्नेही) हया (लज्जा) वाला पर्दा डालने वाला पूज्य तंगी लाने वाला कुशादगी लाने वाला देने वाला आगे करने वाला पीछे करने वाला स्पष्ट करने वाला उपकार करने वाला रक्षा करने वाला संरक्षण प्रदान करने वाला सहायक स्वस्थ करने वाला राज्य का अधिपति लोगों को एकत्र करने वाला आकाश एवं धरती का नूर प्रतापी तथा सम्मान वाला आकाशों एवं धरती का अनोखे ढ़ंग से रचयिता[2]

[1] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 180।

[2] इन नामों तथा क़ुरआन एवं हदीस से लिए गए इनके प्रमाणों के लिए दिखिए इसी लेखक की किताब "شرح أسماء الله الحسنى في ضوء الكتاب والسنة" (शर्हु अस्माइल्लाहिल हुस्ना फ़ी ज़ौइल किताबे वस्सुन्नते)।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा दयालु एवं अति कृपाशील है।

भूमिका

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है। हम उसी की प्रशंसा एवं स्तुति करते हैं, उसी से सहायता माँगते हैं, उसी से क्षमायाचना करते हैं। हम अपनी आत्मा और अपने कर्मों की बुराइयों से अल्लाह की शरण माँगते हैं। वह जिसका मार्गदर्शन करे, उसे कोई पथभ्रष्ट नहीं कर सकता और जिसे पथभ्रष्ट कर दे, उसका कोई मार्गदर्शक नहीं हो सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। वह अकेला है और उसका कोई शरीक व साझी नहीं है। तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। उनपर, उनके परिजनों पर और उनके साथियों पर, अल्लाह की अपार कृपा एवं शांति की बरखा बरसे। तत्पश्चात : यह मेरी पुस्तक " الذِّكْرُ وَالدُّعَاءُ وَالعِلاَجُ بِالرُّقَى مِنَ الكِتَابِ وَالسُّنَّةِ"[1](अज़् ज़िक्रु वद् दुआउ वल इलाजु बिर्रुक़ा मिनल किताबि वस्सुन्नति) का सारांश है। इसमें मैंने उसके दुआ वाले भाग को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया है, ताकि उससे आसानी से लाभ उठाया जा सके। मैंने इसमें कई दुआओं एवं महत्वपूर्ण लाभप्रद बातों का इज़ाफ़ा भी किया है। सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह से, उसके सुंदर नामों एवं उच्च गुणों के वास्ते से दुआ है कि इसे विशुद्ध रूप से अपनी प्रसन्नता की प्राप्ति का साधन बनाए। यह काम उसी का है और उसी के पास इसकी क्षमता है।

अल्लाह की कृपा तथा शांति की बरखा बरसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिजनों, साथियों तथा क़यामत के दिन तक निष्ठा के साथ उनका अनुसरण करने वालों पर।

लेखक

डॉक्टर सईद बिन अली बिन वह्फ़ अल-क़हतानी

शाबान 1408 हिजरी

[1] उपरोक्त मूल किताब, उसमें उल्लिखित हदीसों के विस्तृत संदर्भों के उल्लेख के साथ चार खंडों में छप चुकी है। उसके प्रथम एवं द्वितीय खंड में अज़कार (हिस्न अल-मुस्लिम) हैं, तीसरे खंड में दुआएँ हैं और चौथे खंड में दुआओं के द्वारा इलाज का उल्लेख है।

दुआ की फ़ज़ीलत

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "तथा तुम्हारे पालनहार ने कहा है कि मुझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में, जो लोग मेरी इबादत (वंदना-प्रार्थना) से अभिमान (अहंकार) करेंगे, तो वे नरक में अपमानित होकर प्रवेश करेंगे।"[1] सर्वशक्तिमान अल्लाह ने एक अन्य स्थान पर फ़रमाया : "(हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः, उन्हें भी चाहिए कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह पाएँ।"[2] तथा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "दुआ ही इबादत है। तुम्हारे रब ने कहा है : "मुझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा।"[3]एक अन्य हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुम्हारा रब बड़ा ही लज्जा वाला तथा दानशील है। जब कोई बंदा उसके आगे अपने हाथों को फैलाता है, तो उसे उनको खाली लौटाने में शर्म आती है।"[4] एक अन्य हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो मुसलमान कोई ऐसी दुआ करता है, जिसमें गुनाह एवं रिश्ते को काटने जैसी बातें न हों, उसे अल्लाह उस दुआ के बदले तीन में से कोई एक वस्तु प्रदान करता है। या तो उसके द्वारा माँगी गई वस्तु उसे इसी दुनिया में प्रदान कर देता है या उसे उसके लिए आख़िरत में जमा रखता है या उससे उस दुआ के समान कोई बुराई

[1] मुस्तदरक हाकिम 1/541, ज़वाइद मुसनद अल-बज़्ज़ार 2/442 हदीस संख्या : 2177 तथा तबरानी की किताब "अद-दुआ" हदीस संख्या : 1435। हैसमी मज़मअ अज़-ज़वाइद 10/179 में कहते हैं : "तबरानी की सनद जय्यिद (उत्तम) है।"

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 186।

[3] सुनन अबू दाऊद 2/78 हदीस संख्या : 1481, सुनन तिरमिज़ी 5/211 हदीस संख्या : 2959 तथा सुनन इब्न-ए-माजा 2/1258। अलबानी ने इसे सहीह जामे अल-सग़ीर 3/150 तथा सहीह इब्न-ए-माजा 2/324 में सहीह कहा है।

[4] सुनन अबू दाऊद 2/78 हदीस संख्या : 1488, सुनन तिरमिज़ी 5/557 हदीस संख्या : 3556 तथा सुनन इब्न-ए-माजा 2/1271 हदीस संख्या : 3865। इब्न-ए-हजर कहते हैं : "इसकी सनद जय्यिद (उत्तम) है।" अलबानी ने भी इसे सहीह सुनन अत-तिरमिज़ी 3/179 में सहीह कहा है।

दूर कर देता है।" सहाबा ने कहा : तब तो हम बहुत ज़्यादा दुआएँ किया करेंगे। आपने फ़रमाया : "अल्लाह कहीं अधिक प्रदान करने वाला है।"[1] [2]

[1] सुनन तिरमिज़ी 5/566 तथा 5/462 हदीस संख्या : 3573 तथा मुसनद अहमद 3/18 हदीस संख्या : 11150। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे अल-सग़ीर 5/116 तथा सहीह सुनन अत-तिरमिज़ी 3/140 में सहीह कहा है।

[2] देखिए मूल पुस्तक 3/863-926।

दुआ के शिष्टाचार और (अल्लाह के निकट) उस के स्वीकार्य होने में सहायक वस्तुएँ:

1- अल्लाह के प्रति पूर्ण निष्ठा।

2- शुरू में अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति करना और उसके बाद अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर दरूद भेजना। अंत भी इसी से करना।

3- पूरे मन से दुआ करना और क़बूल होने का विश्वास रखना।

4- आग्रहपूर्वक दुआ करना और जल्दबाज़ी न करना।

5- दुआ करते समय मन को दुआ पर केंद्रित रखना।

6- खुशी एवं परेशानी दोनों समय दुआ करना।

7- केवल अल्लाह ही से माँगना।

6- परिवार, धन, संतान और स्वयं पर बद-दुआ न करना।

9- दुआ करते समय आवाज़ धीमी रखना। न मन ही मन में दुआ करना और न ऊँची आवाज़ में करना।

8- पाप स्वीकार करना और उससे क्षमा माँगना, तथा अनुग्रह को पहचानना और इसके लिए अल्लाह का आभारी होना।

11- दुआ में जान-बूझकर तुकबंदी न करना।

12- अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना, विनम्रता धारण करना तथा जन्नत की चाहत एवं जहन्नम का भय रखना।

13- तौबा करने के साथ-साथ छीने हुए अधिकारों को वापस करना।

14- तीन बार दुआ करना।

15- क़िबला की ओर मुँह करना।

16- दुआ करते समय दोनों हाथों को उठाना।

17- हो सके, तो दुआ से पहले वज़ू कर लेना।

18- दुआ में सीमा का उल्लंघन न करना।

19- किसी के लिए दुआ करते समय पहले अपने लिए दुआ करना[1]।

20- अल्लाह के सुंदर नामों तथा उच्च गुणों, अपने किसी सत्कर्म या किसी जीवित एवं उपस्थित सदाचारी व्यक्ति की दुआ को वसीला बनाना।

21- खाना, पीना और वस्त्र हलाल कमाई का होना।

22- किसी गुनाह या खूनी रिश्ता तोड़ने की दुआ ना करना।

23- भलाई का आदेश देना तथा बुराई से रोकना।

24- तमाम गुनाहों से दूर रहना।

दुआ के अधिक स्वीकार योग्य होने के समय, स्थितियाँ और स्थान[2]:

1- लैलतुल क़द्र।

2- रात का अंतिम भाग।

3- फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद।

4- अज़ान एवं इक़ामत के बीच।

5- प्रत्येक रात का एक विशिष्ट समय।

6- फ़र्ज़ नमाज़ों की अज़ान के समय।

7- वर्षा होने के समय।

8- अल्लाह के मार्ग में युद्ध के लिए सेनाओं के आगे बढ़ते समय।

9- जुमा के दिन का एक विशिष्ट समय।

---

[1] अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से जहाँ यह साबित है कि आपने दुआ करते समय पहले अपने लिए दुआ की, वहीं यह भी साबित है कि पहले अपने लिए दुआ नहीं की। जैसा कि अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु), अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की माता आदि के लिए आपका व्यवहार देखने को मिला। इस मसले में विस्तृत जानकारी के लिए देखिए : इमाम नववी की शर्ह सहीह मुस्लिम 15/144, सुनन तिर्मिज़ी की शर्ह तोहफ़तुलअहवज़ी 9/328 और सहीह बुख़ारी की शर्ह फ़त्हुल बारी 1/281।

[2] इन समयों, स्थितियों एवं स्थानों को विस्तार के साथ मूल पुस्तक 3/975-1117 में देखें।

इस समय के संबंध में सबसे बेहतर मत यह है कि इससे अभिप्राय जुमे के दिन अस्र के बाद का अंतिम भाग है। वैसे ख़ुत्बा (भाषण) एवं नमाज़ का समय भी अभिप्रेत हो सकता है।

10. सच्ची नीयत के साथ ज़मज़म का पानी पीते समय।

11- सजदे में।

12- रात में नींद से जागते समय। इस समय वह दुआ करनी चाहिए जो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से वर्णित है।

13- जब पवित्र अवस्था में सोए और फिर रात में नींद टूट जाने पर दुआ करे।

14-"لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ" के साथ दुआ करते समय।

15- मृतक के प्राण त्यागने के बाद लोगों का दुआ करना।

15- अंतिम तशह्हुद में अल्लाह की प्रशंसा करने और नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर दरूद भेजने के बाद दुआ करना।

17- अल्लाह को उसके उस इस्म-ए-आज़म (सबसे महान नाम) के साथ पुकारते समय, जिसके द्वारा उसे पुकारे जाने पर वह क़बूल करता और माँगे जाने पर प्रदान करता है।[1]

18- किसी मुसलमान का अपने मुसलमान भाई की अनुपस्थिति में उसके लिए दुआ करना।

19- अरफ़ा के दिन अरफ़ा के मैदान में दुआ करना।

20- रमज़ान महीने में दुआ करना।

21- मुसलमानों के ज़िक्र की मजलिसों (सभाओं) में एकत्र होते समय।

22- मुसीबात के समय यह दुआ पढ़ने पर : " إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي ، وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا" (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुसीबती व अख़लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा)।

[1] अल्लाह का सबसे महान नाम इस किताब की हदीस संख्या 203, 104 और 105 में देखें।

23- उस समय की जाने वाली दुआ, जब दिल अल्लाह की ओर आकर्षित हो और अल्लाह के प्रति पूर्ण निष्ठा प्राप्त हो।

24- उत्पीड़ित की ओर से उत्पीड़क के हक़ में की गई बद-दुआ।

25- पिता का अपने संतान के लिए दुआ करना या उसपर बद-दुआ करना।

26- यात्री की दुआ।

27- रोज़ेदार की दुआ, जो इफ़तार करने तक की जाए।

28- रोज़ेदार की दुआ, जो इफ़तार के समय की जाए।

29- विकल (परेशान) व्यक्ति की दुआ।

30- न्यायकारी शासक की दुआ।

31- आज्ञाकारी पुत्र की अपने माता-पिता के लिए दुआ।

32. वुज़ू के बाद दुआ करना, जब वह दुआ की जाए, जो इस अवसर पर नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से वर्णित है।

33- जमरा-ए-सुग़रा को कंकड़ मारने के बाद दुआ करना।

34- जमरा-ए-वुसता को कंकड़ मारने के बाद दुआ करना।

35- काबा के अंदर दुआ करना। यहाँ यह याद रहे कि जिसने हिज्र के अंदर नमाज़ पढ़ी उसने काबा के अंदर नमाज़ पढ़ी।

36- सफ़ा पहाड़ी पर दुआ करना।

37- मरवा पहाड़ी पर दुआ करना।

38- मशअर-ए-हराम के निकट दुआ करना।

एक मुसलमान जहाँ भी रहे, वहीं से अल्लाह को पुकारे और उससे दुआ करे। सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने कहा है : "(हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः, उन्हें भी चाहिए कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह

पाएँ।"[1]लेकिन इन समयों, स्थितियों एवं स्थानों की विशेषता यह है कि ये अधिक ध्यान केंद्रित किए जाने के योग्य हैं।

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या-186।

क़ुरआन एवं हदीस से दुआएँ

हर प्रकार की प्रशंसा एवं स्तुति केवल अल्लाह के लिए है तथा उसकी दया और शांति अवतरित हो उसके अंतिम संदेष्टा मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर जिनके बाद कोई नबी नहीं आएगा।

1- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो, बड़ा दयालु एवं अति कृपावान है। "सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है। जो अत्यंत कृपाशील और दयावान् है। जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है। हम केवल तेरी ही उपासना करते हैं और केवल तुझी से सहायता माँगते हैं। हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा। उनका मार्ग, जिनपर तूने पुरस्कार किया। उनका नहीं, जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका, जो कुपथ (गुमराह) हो गए।"

2- "हे हमारे पालनहार! हमसे यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।"[1]

3- "तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में, तू अति क्षमी, दयावान् है।"[2]

4- "ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी भलाई प्रदान कर और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।"[3]

5- "हमने सुना और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही पास आना है।"[4]

6- "हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जाएँ, तो हमें न पकड़। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल, जितना हमसे पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, हमें क्षमा कर दे तथा हमपर दया कर। तू ही हमारा स्वामी है, अतः काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।"[5]

---

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या-127।

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या- 128।

[3] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 201।

[4] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 285।

[5] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 286।

7- "हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को, हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात कुटिल न कर। वास्तव में, तू बहुत बड़ा दाता है।

8- "ऐ हमारे पालनहार! हम ईमान ला चुके। अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा।"[1]

9- "ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से एक अच्छी संतान प्रदान कर। निश्चय ही तू प्रार्थना सुनने वाला है।"[2]

10- "ऐ हमारे पालनहार! जो कुछ तूने उतारा है, हम उसपर ईमान लाए तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया। अतः, हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।"[3]

11- "हे हमारे पालनहार! हमारे लिए हमारे पापों को क्षमा कर दे तथा हमारे विषय में हमारी अति को। और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे और काफ़िर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता कर।"[4]

12- "हे हमारे पालनहार! तूने यह सब व्यर्थ नहीं रचा है।तू पवित्र है। तू हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले। हे हमारे पालनहार! तूने जिसे नरक में झोंक दिया, उसे अपमानित कर दिया और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा। हे हमारे पालनहार! हमने एक पुकारने वाले को ईमान के लिए पुकारते हुए सुना कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए। हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे तथा हमारी बुराईयों की अनदेखी कर दे और हमारी मौत पुनीतों (सदाचारियों) के साथ हो। हे हमारे पालनहार! हमें, तूने रसूलों द्वारा जो वचन दिया है, हमें वो प्रदान कर तथा क़यामत के दिन हमें अपमानित न कर। वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।"[5]

13- "हम ईमान ले आए, अतः हमें भी उनमें लिख ले जो सत्य की पुष्टि करते हैं।"[6]

14- "ऐ हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर अत्याचार किया है। यदि तूने हमें क्षमा नहीं किया और हमपर दया नहीं की, तो अवश्य ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएँगे।"[1]

---

[1] सूरा आले इमरान, आयत संख्या : 16।

[2] सूरा आले इमरान, आयत संख्या : 38।

[3] सूरा आले इमरान, आयत संख्या : 53।

[4] सूरा आले इमरान, आयत संख्या : 147।

[5] सूरा आले इमरान, आयत संख्या : 191-194।

[6] सूरा अल-माइदा, आयत संख्या : 83।

15- "हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।"[2]

16- ऐ अल्लाह! "तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमपर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान है। और हमारे लिए इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी।"[3]

17- "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है। उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। मेरा उसी पर भरोसा है और वह महान सिंहासन का स्वामी है।"[4]

18- "हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिए परीक्षा का साधन न बना। और अपनी दया से हमें काफ़िरों से बचा ले।"[5]

19- "मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझसे ऐसी चीज़ की माँग करूँ, जिस (की वास्तविक्ता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है और यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझपर दया न की, तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।"[6]

20- ऐ अल्लाह! "हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर और मुझे सदाचारियों में मिला दे।!"[7]

21- "हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे और मुझे तथा मेरी सन्तान को मूर्ति-पूजा से बचा ले।"[8]

22- "मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहर! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।"[9]

---

[1] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 23।

[2] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 47।

[3] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 155-156।

[4] सूरा तौबा, आयत संख्या 129।

[5] सूरा यूनुस, आयत संख्या : 85-86।

[6] सूरा हूद, आयत संख्या : 47।

[7] सूरा यूसुफ़, आयत संख्या : 101। और लाभ के लिए देखिए इब्न अल-क़य्यिम की किताब अल-फ़वाइद पृष्ठ : 436, 437।

[8] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :35।

[9] सूरा इबराहीम, आयत संख्या :40।

23- "हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन ह़िसाब लिया जाएगा।"[1]

24- "हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर और हमारे लिए हमारे विषय का प्रबंध कर दे।"[2]

25- "हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिए मेरा सीना। तथा सरल कर दे, मेरे लिए मेरा काम। और खोल दे, मेरी ज़ुबान की गाँठ। ताकि लोग मेरी बात अछी तरह समझ सकें।"[3]

26- "हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।"[4]

27- "तेरे सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं है। तू पवित्र है। निःसंदेह मैं ही अत्याचारियों में से था।"[5]

28- "हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला और तू सबसे अच्छा उत्तराधिकारी है।"[6]

29- "तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से। तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वे मेरे पास आएँ।"[7]

30- "हमारे पालनहार! हम ईमान लाए। तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर और तू सब दयावानों से उत्तम है।"[8]

31- "ऐ मेरे रब! क्षमा कर दे और दया कर तथा तू सबसे बेहतर दया करने वाला है।"[9]

32- "हे हमारे पालनहार! फेर दे हमसे नरक की यातना को, वास्तव में, उसकी यातना चिपक जाने वाली है।वास्तव में वह बुरा आवास और अस्थान है।"[1]

---

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 41।

[2] सूरा अल-कह्फ़, आयत संख्या : 10।

[3] सूरा ताहा, आयत संख्या : 25-28।

[4] सूरा ताहा, आयत संख्या : 114।

[5] सूरा अल-अम्बिया, आयत संख्या : 87।

[6] सूरा अल-अम्बिया, आयत संख्या : 89।

[7] सूरा अल-मोमिनून, आयत संख्या : 97-98।

[8] सूरा अल-मोमिनून, आयत संख्या : 109।

[9] सूरा अल-मोमिनून, आयत संख्या : 118।

33- "ऐ हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों और संतानों से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें परहेज़गारों का इमाम बना।"[2]

34- "हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर सदाचारियों में। और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर, आगामी लोगों में। और बना दे मुझे, सुख के स्वर्ग का उत्तराधिकारी।"[3]

35- "तथा मुझे निरादर न कर, जिस दिन सब जीवित किए जाएँगे।" जिस दिन, लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान। परन्तु, जो अल्लाह के पास स्वच्छ दिल लेकर आएगा।

36- "हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का, जो पुरस्कार तूने मुझपर तथा मेरे माता-पिता पर किया है तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ, जिससे तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से, अपने सदाचारी भक्तों में।

37- "हे मेरे पालनहार! मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया है। अतः तू मुझे क्षमा कर दे।"[4]

38- "हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले अत्याचारी जाति से।"[5]

39- "मूझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे सीधा मार्ग दिखाएगा।"[6]

40- "हे मेरे पालनहार! तू, जो भी भलाई मुझपर उतार दे, मैं उसका आकांक्षी हूँ।"[7]

41- "मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर, उपद्रवी जाति पर।"[8]

42- "हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे, एक सदाचारी (पुनीत) पुत्र।"[9]

---

[1] सूरा अल-फ़ुरक़ान, आयत संख्या : 65-66।

[2] सूरा अल-फ़ुरक़ान, आयत संख्या :184।

[3] सूरा अश-शुअरा, आयत संख्या : 83-85।

[4] सूरा अल-क़सस, आयत संख्या : 16।

[5] सूरा अल-क़सस, आयत संख्या : 21।

[6] सूरा अल-क़सस, आयत संख्या : 22।

[7] सूरा अल-क़सस, आयत संख्या : 24।

[8] सूरा अल-अन्कबूत, आयत संख्या : 30।

[9] सूरा अस-साफ़्फ़ात, आयत संख्या : 100।

43- "ऐ मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं तेरी उस नेमत का आभार प्रकट करूँ, जो तूने मुझे और मेरे माता-पिता को प्रदान किया है तथा यह कि मैं ऐसा सत्कर्म करूँ, जिससे तू प्रसन्न हो जाए तथा मेरे लिए मेरी संतान को सुधार दे। मैं तेरे समक्ष तौबा करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।"[1]

44- "हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को, जो हमसे पहले ईमान लाए और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उनके लिए, जो ईमान लाए। हे हमारे पालनहार! तू अति करुणामय, दयावान है।"[2]

45- "हे हमारे पालनहार! हमने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।"[3]

46- "हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा (का साधन) काफ़िरों के लिए और हमें क्षमा कर दे। हे हमारे पालनहार! वास्तव में, तू ही प्रभुत्वशाली, गुणी है।"[4]

47- "हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को, वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।"[5]

48- "मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझे तथा मेरे माता-पिता को और उसे, जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान लाकर तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को"।[6]

49- "ऐ अल्लाह! मुझे उस सत्य का मार्ग दिखा, जिसके बारे में लोगों में विभेद है। निश्चय ही तू जिसे चाहता है, सत्य का मार्ग दिखाता है।"[7]

50- "ऐ अल्लाह! मुझे वह हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान कर, जिसे वह मिल गई उसे बहुत बड़ी भलाई मिल गई।"[8]

---

[1] सूरा अल-अहक़ाफ़, आयत संख्या :15।

[2] सूरा अल-हश्र, आयत संख्या : 10।

[3] सूरा अल-मुम्तहिना, आयत संख्या : 4।

[4] सूरा अल-मुम्तहिना, आयत संख्या : 5।

[5] सूरा अत-तहरीम, आयत संख्या : 8।

[6] सूरा नूह, आयत संख्या : 28।

[7] सूरा अल-बक़रा की आयत संख्या : 213 से प्राप्त।

[8] सूरा अल-बक़रा आयत संख्या : 269 से प्राप्त।

51- "ऐ अल्लाह! मुझे स्थिर कथन द्वारा सांसारिक जीवन तथा आख़िरत में स्थिरता प्रदान कर।"[1]

52- "ऐ अल्लाह! हमारे पास ईमान को प्रिय बना दे और उसे हमारे दिलों में सजा दे तथा हमारे पास कुफ़्र (अविश्वास) गुनाह एवं अवज्ञा को अप्रिय बना दे और हमें सुपथ पर चलने वालों में से बना दे।"[2]

53- "ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आत्मा के लोभ से बचा और मुझे सफल लोगों में से बना।"[3]

54- "ऐ हमारे अल्लाह, हमें दुनिया में भी भलाई प्रदान कर और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।"[4]

55- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ जहन्नम के फ़ितने और जहन्नम की यातना से, क़ब्र के फ़ितने और क़ब्र की यातना से, ख़ुशहाली के फ़ितने की बुराई से और निर्धनता के फ़ितने की बुराई से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ काना दज्जाल के फ़ितने की बुराई से। ऐ अल्लाह! मेरे दिल को बर्फ़ तथा ओले के पानी से धो दे और उसे गुनाहों की मलिनता से साफ़-सुथरा कर दे, जिस प्रकार से तू ने उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़-सुथरा किया है। तथा मेरे गुनाहों एवं मेरे बीच उतनी दूरी बना दे, जितनी दूरी तू ने सूर्योदय एवं सूर्यास्त के स्थानों के बीच रखी है। ऐ अल्लाह! मैं सुस्ती, गुनाह और क़र्ज़ से तेरी शरण माँगता हूँ।"[5]

56- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ विवशता, सुस्ती, कायरता, अधिक बुढ़ापे और कंजूसी से। तेरी शरण में आता हूँ क़ब्र के अज़ाब से तथा तेरी शरण में आता हूँ जीवन और मृत्यु के फ़ितने से।"[6]

57- "ऐ अल्लाह!, मैं आपदा के कष्ट, दुर्भाग्य का शिकार होने, बुरे भाग्य (तक़दीर) और मुझे विपदा में देख कर मेरे शत्रुओं के खुश होने से तेरी शरण माँगता हूँ।"[1]

---

[1] सूरा इबराहीम आयत संख्या : 27 से प्राप्त।

[2] सूरा अल-हुजुरात आयत संख्या : 7 से प्राप्त।

[3] सूरा अत-तग़ाबुन आयत संख्या : 16 से प्राप्त।

[4] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 4522 तथा 6389 एवं सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2690।

[5] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 832 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 589।

[6] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 2823 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या :2706।

58- "ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे धर्म को सुधार दे, जिस में मेरे मामले का संरक्षण है, और मेरे लिए मेरी दुनिया को सुधार दे, जिसके अंदर मेरी जीविका है, और मेरे लिए मेरी आख़िरत को सुधार दे, जहाँ मुझे लौटना है। तथा मेरे लिए जीवन को प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे और मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बुराई से मोक्ष का कारण बना दे।"[2]

59- "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे हिदायत, तक़वा, पाक दामनी और बेनियाज़ी माँगता हूँ।"[3]

60- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ विवशता, आलस्य, कायरता, कंजूसी, बुढ़ापे तथा क़ब्र की यातना से। ऐ अल्लाह! मेरे नफ़्स को तक़्वा प्रदान कर और उसे पवित्र कर दे। तू ही सबसे बेहतर पवित्र करने वाला है। तू ही उसका मालिक और स्वामी है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ ऐसे ज्ञान से जो लाभदायक न हो, ऐसे दिल से जो भय न खाता हो, ऐसे नफ़्स से जो तृप्त (संतुष्ट) न होता हो और ऐसी दुआ से जो स्वीकार न की जाए।"[4]

61- "ऐ अल्लाह! मेरा मार्गदर्शन कर और मुझे सही रास्ते पर चला।"[5]

62- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी नेमत के छिन के जाने, तेरे प्रदान किए हुए कल्याण के (विपत्ति में) बदल जाने, तेरी अचानक आपदा तथा तेरे हर प्रकार के क्रोध से तेरी शरण चाहता हूँ।"[6]

63- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ उसकी बुराई से जो मैंने किया है और उसकी बुराई से जो मैंने नहीं किया है।"[7]

---

[1] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6347 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2707। सहीह मुस्लिम के शब्द इस प्रकार हैं : "अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपदा के कष्ट, दुर्भाग्य के शिकार होने, बुरे भाग्य (तक़दीर) और दुश्मनों के खुश होने से (अल्लाह की) शरण माँगा करते थे।"

[2] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2720।

[3] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2721।

[4] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2722।

[5] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2725।

[6] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2739।

[7] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2716।

64- "ऐ अल्लाह! मेरे धन तथा संतान में वृद्धि कर दे और मुझे जो कुछ प्रदान किया है उसमें मेरे लिए बरकत दे।"[1]"[(तथा अपने आज्ञापालन पर मेरी आयु लंबी कर, मेरा कर्म अच्छा कर) और मुझे क्षमा कर दे।]"[2]

65- "अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, जो महान और सहनशील है। अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो महान अर्श (सिंहासन) का मालिक है। अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो आकाशों का स्वामी, धरती का स्वामी और सम्मानित अर्श (सिंहासन) का स्वामी है।"[3]

66- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी ही कृपा की आशा रखता हूँ। अतः तू मुझे क्षण भर के लिए भी मेरी आत्मा के हवाले न कर। तथा मेरे लिए मेरे सारे कार्यों को ठीक कर दे। तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक उपास्य नहीं है।"[4]

67- "तेरे सिवा कोई (वास्तविक) पूज्य नहीं है। तू पवित्र है। निःसंदेह मैं ही ज़ालिमों में से था।"[5]

---

[1] इसका प्रमाण अनस -रज़ियल्लाहु अनहु- के लिए की गई अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की यह दुआ है : "ऐ अल्लाह! इसके धन तथा संतान को अधिक कर और इसे जो कुछ दिया है उसमें इसके लिए बरकत दे।" सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 1982 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 660।

[2] इमाम बुख़ारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या ; 653। अलबानी ने इसे सिलसिला सहीहा हदीस संख्या : 2241 तथा सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद पृष्ठ : 244 में सहीह कहा है। कोष्ठक में लिखी गई दुआ का प्रमाण वह हदीस है, जिसमें है कि जब अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से पूछा गया कि सबसे उत्तम व्यक्ति कौन है, तो आपने उत्तर दिया : "जिसकी आयु लंबी हो और कर्म अच्छा हो।" सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 2329 तथा मुसनद अहमद : 17716। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 2/271 में सहीह कहा है। मैंने शैख बिन बाज़ से पूछा कि क्या यह दुआ करना सुन्नत है, तो उन्होंने हाँ में उत्तर दिया।

[3] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6345 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या :2730।

[4] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 5090 तथा मुसनद अहमद 5/42। अलबानी ने इसे सहीह सुनन अबू दाऊद 3/250 और सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 260 में हसन कहा है तथा शैख़ बिन बाज़ ने भी इसकी सनद को तोहफ़ा अल-अख़यार पृष्ट : 24 में हसन कहा है।

[5] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3505 तथा मुसतदरक हाकिम। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनके कथन से सहमति व्यक्त की है, 1/505। अलबानी ने भी सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/168 में इसे सहीह कहा है। इसके शब्द हैं : "मछली वाले नबी ने मछली के पेट में यह दुआ की थी :

68- "ऐ अल्लाह! मैं तेरा बंदा हूँ और तेरे बंदे एवं बंदी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी तेरे हाथ में है। मेरे बारे में तेरा आदेश चलता है। मेरे बारे में तेरा निर्णय न्याय पर आधारित है। मैं तुझसे तेरे हर उस नाम का वास्ता देकर माँगता हूँ, जिससे तूने ख़ुद को नामित किया है, या उसे अपनी किताब में उतारा है, या उसे अपनी किसी सृष्टि को सिखाया है, या उसे अपने पास अपने परोक्ष ज्ञान में सुरक्षित कर रखा है, कि क़ुरआन को मेरे दिल का वसंत, मेरे सीने की रोशनी, मेरे दुःख का मोचन और मेरी व्याकुलता को समाप्त करने वाला बना दे।"[1]

69- "ऐ अल्लाह! दिलों के फेरने वाले! हमारे दिलों को अपनी आज्ञाकारिता की ओर फेर दे।"[2]

70- "ऐ दिलों को पलटने वाले, मेरे दिल को अपने धर्म पर जमाए रख।"[3]

71- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे विश्वास, क्षमा तथा दुनिया एवं आख़िरत में सलामती और कल्याण माँगता हूँ।"[4]

"أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ" (ला इलाहा इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन) जो भी मुसलमान किसी मुसीबत के समय यह दुआ करेगा, अल्लाह उसकी दुआ को स्वीकार करेगा।"

[1] मुसनद अहमद 1/391 तथा 452 एवं मुसतदरक हाकिम 1/509। हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर ने अल-अज़कार की हदीसों के संदर्भों का उल्लेख करते समय इसे हसन कहा है और अलबानी ने अल-कलिम अत-तय्यिब की हदीसों के संदर्भों का उल्लेख करते समय सहीह कहा है।

[2] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2654।

[3] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3522, मुसनद अह़मद 4/182 और मुसतदरक हाकिम 1/525 तथा 528। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। अलबानी ने भी सहीह अल-जामे 6/309 और सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/171 में इसे सहीह कहा है। उम्म-ए-सलमा -रज़ियल्लाहु अन्हा - ने कहा है : "अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- यह दुआ सबसे अधिक किया करते थे।"

[4] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3514 और इमाम बुख़ारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 726। तिरमिज़ी के शब्द हैं : "अल्लाह से दुनिया एवं आख़िरत में आख़िरत में सलामती और कल्याण माँगो।" जबकि एक जगह है : "अल्लाह से क्षमा एवं आख़िरत में सलामती और कल्याण माँगो। क्योंकि किसी को यक़ीन अर्थात विश्वास के बाद सलामती और कल्याण से बढ़कर कोई चीज़ प्राप्त नहीं हुई।" अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 3/180, 3/185 तथा 3/170 में सहीह करार दिया है। इसके कई शवाहिद हैं, जिन्हें अहमद शाकिर द्वारा तरतीब दी गई मुसनद अहमद 1/156-157 में देखा जा सकता है।

72- "ऐ अल्लाह! सभी कामों में हमारा परिणाम अच्छा कर और हमें दुनिया के अपमान तथा आख़िरत की यातना से बचा।"[1]

73- ऐ मेरे रब! मेरी सहायता कर और मेरे विरुद्ध सहायता न कर, मुझे विजय प्रदान कर और किसी को मेरे विरुद्ध विजय प्रदान न कर, मेरे हक़ में योजना बना तथा मेरे विरुद्ध योजना मत बना, मुझे सच्चाई के रास्ते पर चला और सच्चाई के रास्ते पर चलना मेरे लिए आसान कर तथा मुझ पर अत्याचार करने वाले पर मुझे विजयी बना। ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्र अदा करने वाला, अपना ज़िक्र करने वाला, अपने से डरने वाला, अपना अनुकरण करने वाला, अपने आगे झुकने वाला, अत्यधिक दुआ करने वाला एवं याचना करने वाला तथा अपनी ओर लौटने वाला बना। ऐ मेरे रब! मेरी तौबा क़बूल कर, मेरे गुनाह धो दे, मेरी दुआ क़बूल कर, मेरी दलील को सिद्ध कर, मेरे दिल को सच्चा रास्ता दिखा, मेरी ज़बान को दुरुस्त रख और मेरे दिल के मैल- कुचैल को निकाल दे।

74- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस चीज़ की भलाई माँगता हूँ जिसकी भलाई तेरे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने तुझसे माँगी है और तेरी उस चीज़ की बुराई से शरण माँगता हूँ जिसकी बुराई से शरण तेरे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने तुझसे माँगी है। तुझसे ही मदद माँगी जाती है और तेरा ही काम पहुँचाना है। अल्लाह की सहायता के बिना न बुराई से बचा जासकता है ,और न ही उसकी आज्ञा मानने का सामर्थ्य हो सकता है।"[2]

---

[1] मुसनद अहमद 4/181, तबरानी की पुस्तक (अल-मुअजम) अल-कबीर 33/2/1169 और उन्हीं की पुस्तक अद-दुआ हदीस संख्या : 1436 और इब्न-ए-हिब्बान हदीस संख्या : 2424 तथा 2425 (मवारिद)। हैसमी ने मजमा अज़-ज़वाइद 10/178 में कहा है : "अहमद के वर्णनकर्ता और तबरानी की एक सनद (के वर्णनकर्ता) स़िक़ात अर्था विश्वस्त हैं।"

[2] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3521। इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3846, जिसका अर्थ इसी के जैसा है। तिरमिज़ी कहते हैं : "यह हदीस हसन ग़रीब है।" अलबानी ने इसे ज़ईफ़ सुनन तिरमिज़ी पृष्ठ : 387 में ज़ईफ़ कहा है।

75- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ अपने कान की बुराई से, अपनी आँख की बुराई से, अपनी ज़बान की बुराई से, अपने दिल की बुराई से और अपनी शर्मगाह की बुराई से।"[1]

76- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ सफ़ेद दाग़ से, पागलपन से, कोढ़ से और बुरी बीमारियों से।"[2]

77- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ बुरे स्वभाव, कर्म एवं इच्छाओं से।"[3]

78- "ऐ अल्लाह! निश्चय तू क्षमा करने वाला दयालु है। तुझे क्षमा करना पसंद है। अतः मुझे क्षमा कर दे।"[4]

79- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नेकी के काम करने की क्षमता माँगता हूँ, बुराइयों को छोड़ने का सुयोग माँगता हूँ, निर्धनों से प्रेम करने का मनोबल माँगता हूँ और इस बात का प्रार्थी हूँ कि तू मुझ को माफ कर दे और मुझपर दया कर। जब तू किसी समुदाय को विपदा ग्रस्त करना चाहे तो मुझे उस विपदा में लिप्त करने से पहले ही उठा ले और तुझसे मैं तेरा प्रेम और तुझसे प्रेम करने वाले का प्रेम माँगता हूँ और उस कर्म का प्रेम माँगता हूँ जो तेरे प्रेम से करीब कर दे।"[5]

---

[1] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1551, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3492, सुनन नसई हदीस संख्या : 5470 आदि। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/166 तथा सहीह सुनन नसई 3/1108 में सहीह कहा है।

[2] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1554, सुनन नसई हदीस संख्या : 5493 तथा मुसनद अहमद 3/192। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 3/1116 और सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/184 में सहीह कहा है।

[3] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3591 तथा इब्न-ए-हिब्बान हदीस संख्या : 2422 (मवारिद), हाकिम 1/532 और तबरानी की (अल-मुअजम) अल-कबीर 19/19/36। अलबानी ने इसे सहीह अत-तिरमिज़ी 3/184 में सहीह कहा है।

[4] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3513 तथा नसई की अल-कुबरा हदीस संख्या : 7712। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/170 में सहीह कहा है।

[5] इसे इन्हीं शब्दों के साथ अहमद (5/243) ने रिवायत किया है और तिरमिज़ी (हदीस संख्या : 3235) ने इससे मिलते-जुलते शब्दों के साथ रिवायत किया है और हसन कहते हुए कहा है : "मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल -यानी इमाम बुख़ारी- से इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि यह हदीस हसन सहीह है।" इस हदीस के अंत में अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "यह सत्य है।

80- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जल्द तथा देर से मिलने वाली हर प्रकार की भलाई माँगता हूँ, जो मैं जानता हूँ और जो नहीं जानता। और मैं जल्द तथा देर से आने वाली हर प्रकार की बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ, जो मैं जानता हूँ और जो नहीं जानता। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस भलाई का प्रश्न करता हूँ, जो तेरे बंदे और तेरे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने तुझसे तलब किया है, और मैं उस बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ [तेरी शरण चाही है] [जिससे] तेरे बंदे और तेरे नबी ने। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत तथा उससे निकट करने वाले कार्य एवं कथन का प्रश्न करता हूँ, तथा मैं जहन्नम और उससे निकट कर देने वाले कार्य एवं कथन से तेरी शरण चाहता हूँ। और मैं तुझसे सवाल करता हूँ कि तूने मेरे लिए जो भी फैसला किया है, उसे बेहतर कर दे।"[1]

81- "ऐ अल्लाह! जब मैं खड़ा रहूँ तो इस्लाम के द्वारा मेरी सुरक्षा कर, जब मैं बैठा रहूँ तो इस्लाम के द्वारा मेरी सुरक्षा कर और जब मैं सोया रहूँ तो इस्लाम के द्वारा मेरी सुरक्षा कर और मुझपर किसी शत्रु तथा ईर्ष्या करने वाले को हँसने का अवसर न दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हर वह भलाई माँगता हूँ, जिसके कोषागार तेरे हाथ में हैं और हर उस बुराई से तेरी शरण माँगता हूँ, जिसके कोषागार तेरे हाथ में हैं।"[2]

82- "ऐ अल्लाह! तू हमें अपना इतना भय प्रदान कर जो हमारे और तेरी अवज्ञा के बीच आड़ बन जाए, तथा हमें अपने आज्ञापालन का सामर्थ्य प्रदान कर जिसके द्वारा तू हमें अपनी जन्नत तक पहुँचा दे और हमें इतना विश्वास प्रदान कर जिसके द्वारा तू हमारे लिए दुनिया की आपदाओं को आसान कर दे। ऐ अल्लाह! जब तक तू हमें जीवित रख, हमारे कानों, हमारी आँखों और हमारी शक्तियों से हमें लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान कर, इन चीज़ों से लाभान्वित होना निरंतर (आजीवन) बाक़ी रख, हमारा प्रतिशोध उन लोगों तक सीमित कर दे जो हम पर अत्याचार करने वाले हैं, जो हमसे दुश्मनी करे उसके ख़िलाफ़ हमारी

अतः इसे पढ़ लो और सीख लो।" इसी तरह इसे हाकिम 1/521 ने भी रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह अत-तिरमिज़ी 3/318 में सहीह कहा है।

[1] सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3846 ने इसे इन्हीं शब्दों के साथ रिवायत किया है, मुसनद अहमद 6/134, कोष्ठक में वृद्धि किये गये दूसरे शब्द इसी के हैं। मुसतदरक हाकिम 1/521। और प्रथम वृद्धि के शब्द हाकिम के ही हैं। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। अलबानी ने भी इसे सहीह सुनन इब्न-ए-माजा 2/327 में सहीह कहा है।

[2] मुसतदरक हाकिम 1/525। हाकिम ने इसे सहीह कहा है, और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है, और अलबानी ने सहीह अल-जामे 2/398 तथा सिलसिला सहीहा 4/54 हदीस संख्या : 1540 में सहीह कहा है।

मदद कर, हमारे धर्म के मामले में हमें आपदा से ग्रस्त न कर, दुनिया को हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य और हमारे ज्ञान की पराकाष्ठा न बना और किसी ऐसे व्यक्ति को हमपर हावी ना कर जो हम पर दया न करे।"[1]

83- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ कायरता से, मैं तेरी शरण में आता हूँ कृपणता से, मैं तेरी शरण में आता हूँ लाचारी की आयु में लौटाए जाने से तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ दुनिया के फ़ितने एवं क़ब्र की यातना से।"[2]

84- "हे अल्लाह! मेरी गलती, मेरी नादानी, और अपने मामलों में निर्धारित सीमा का उल्लंघन करने में मुझे क्षमा कर दे, तथा (वह पाप भी) जिसे तू मुझसे अधिक जानने वाला है, हे अल्लाह तू माफ कर दे मेरे हंसी-मजाक को, गंभीरता पूर्वक किये गये कार्य को, जान बूझ कर अथवा अंजाने में किये गये काम, और ये सब मुझ से हुये हों।"[3]

85- "ऐ अल्लाह! मैंने अपने आप पर बड़ा अत्याचार किया है और तेरे सिवा कोई पापों को क्षमा नहीं कर सकता। इसलिए मुझे अपनी ओर से क्षमा प्रदान कर और मुझपर दया कर। निःसंदेह तू ही क्षमा करने वाला, अति दयालु है।"[4]

86- "ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको तेरे सामने समर्पित कर दिया, तुझपर ईमान लाया, तुझपर भरोसा किया, तेरी ओर लौटा और तेरी मदद से दुश्मनों से झगड़ा किया। ऐ अल्लाह! मैं तेरे ताक़त की शरण में आता हूँ, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, इस बात से कि तू मुझे गुमराह करे। तू जीवंत है, जिसे कभी मौत नहीं आती, जबकि जिन्न और इनसान मर जाते हैं।"[5]

---

[1] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3502 तथा हाकिम 1/528 और इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 446। हाकिम ने इसे सहीह कहा है, ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है और अलबानी ने सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/168 तथा सहीह अल-जामे 1/400 में हसन कहा है।

[2] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 2822।

[3] मुत्तफ़क़ अलैहः सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6398 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2719।

[4] मुत्तफ़क़ अलैहः सहीह बुख़ारी हदीस संख्या :834 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2705।

[5] मुत्तफ़क़ अलैहः सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6398 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2719।

87- "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे तेरी दया को अनिवार्य करने वाली चीज़ें, तेरी क्षमा के साधन, हर पाप से सुरक्षा, अधिक से अधिक पुण्य का सामर्थ्य, जन्नत की प्राप्ति और जहन्नम से मुक्ति माँगता हूँ।"[1]

88- "ऐ अल्लाह! ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को क्षमा कर दे।"[2]

89- "ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे गुनाह को क्षमा कर दे, मेरे घर को कुशादा कर दे और जो चीज़ें मुझे प्रदान की हैं, उनमें बरकत दे।"[3]

90- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा अनुग्रह तथा दया माँगता हूँ। क्योंकि इसका मालिक केवल तू है।"[4]

91- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ निर्बल कर देने वाले बुढ़ापे, लुढ़क कर मरने, मकान एवं दीवार आदि के ढहने के कारण होने वाली मृत्य, चिंता, पानी में डूबकर मरने एवं आग में जलकर मरने से। इसी प्रकार इस बात से तेरी शरण माँगता हूँ कि शैतान मुझको मृत्यु के समय उन्मत्त कर दे तथा इस बात से तेरी शरण माँगता हूँ कि युद्ध के मैदान से भागते

---

[1] मुसतदरक हाकिम 1/525 और बैहक़ी की अद-दावात हदीस संख्या : 206। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। देखिए : नववी की अल-अज़कार पृष्ठ : 340, जिसके शोधकर्ता अब्दुल क़ादिर अल-अरनऊत ने इसे हसन कहा है।

[2] इसका प्रमाण उबादा -रज़ियल्लाहु अनहु- की हदीस है, जिसमें है कि उन्होंने अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को कहते हुए सुना है : "जिसने मोमिन पुरुषों एवं मोमिन स्त्रियों के लिए क्षमायाचना की, अल्लाह उसके लिए हर मोमिन पुरुष एवं हर मोमिन स्त्री के बदले में एक नेकी लिख लेता है।" देखिए : तबरानी की अल-कबीर 5/202 हदीस संख्या : 5092 तथा 3/334 हदीस संख्या : 2155। हैसमी ने इसकी सनद को मजमा अज़-ज़वाइद 10/210 में जय्यिद (उत्तम) कहा है और अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे 5/242 हदीस संख्या : 5902 में हसन कहा है।

[3] मुसनद अहमद 4/63 हदीस संख्या : 16599, 23114 तथा 23118 और सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3500। मुसनद अहमद (देखिए : 27/144, 38/197 तथा 38/145) के शोधकर्ताओं ने इसे (इसकी विभिन्न वर्णन श्रृंखलाओं को मिलाकर) हसन लि-गैरिहि कहा है और अलबानी ने भी सहीह अल-जामे 1/399 में इसे हसन करार दिया है।

[4] इसे तबरानी ने रिवायत किया है और हैसमी ने मज़मा अज़-ज़वाइद 10/159 में कहा है : "मुहम्मद बिन ज़ियाद को छोड़ इसकी वर्णन श्रृंखलाओं के सारे वर्णनकर्ता सहीह के वर्णनकर्ता हैं। फिर मुहम्मद बिन ज़ियाद भी सिक़ा अर्थात विश्वस्त हैं।" अलबानी ने भी इसे सहीह अल-जामे 1/404 हदीस संख्या : 1278 में सहीह कहा है।

हुए मेरी मृत्यु हो एवं इस बात से भी तेरी शरण माँगता हूँ कि किसी ज़हरीले कीड़े के डसने के कारण मेरी मौत हो।!"[1]

92- "ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ भूख से, क्योंकि वह बुरा साथी है। तेरी पनाह माँगता हूँ ख़यानत से, क्योंकि वह बुरा राज़दार है।"[2]

93- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हू विवशता, सुस्ती, कायरता, कंजूसी, निर्बल कर देने वाले बुढ़ापा, हृदय की कठरोता, अचेतना, भुखमरी, अपमान और निर्धनता से। तथा तेरी शरण माँगता हूँ दरिद्रता, कुफ्र, अवज्ञा, कलह, निफ़ाक़, शोहरत और दिखावा से। तथा तेरी शरण माँगता हूँ बहरेपन, गूँगेपन, पागलपन, कोढ़, सफ़ेद दाग और बुरी बीमारियों से।"[3]

94- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ निर्धनता से, [और भुखमरी से], कमी से, अपमान से और इस बात से भी तेरी शरण माँगता हूँ कि मैं किसी पर अत्याचार करूँ या कोई मुझपर अत्याचार करे।"[4]

95- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ स्थायी निवास के बुरे पड़ोसी से, क्योंकि शिविर एवं यात्रा का पड़ोसी (साथी) तो बदल जाता है।"[5]

96- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ ऐसे दिल से जो भय न खाये, ऐसी दुआ से जो ग्रहण न की जाए, ऐसी आत्मा से जो संतुष्ट न होती हो और ऐसे ज्ञान से जो लाभदायक न हो। इन चार चीज़ों से मैं तेरी शरण माँगता हूँ।"[1]

---

[1] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1552 तथा नसई हदीस संख्या : 5531 एवं 5532। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 3/1123 तथा सहीह सुनन अबू दाऊद 1/425 में सहीह कहा है।

[2] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1547 तथा सुनन नसई हदीस संख्या : 5483। अलबानी ने इसे सहीह (सुनन) अन-नसई 3/1112 में हसन कहा है।

[3] सुनन नसई हदीस संख्या : 5493 तथा हाकिम 1/530। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे 1/406 तथा इरवा अल-ग़लील हदीस संख्या : 852 में सहीह कहा है।

[4] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1544 तथा सुनन नसई हदीस संख्या : 5475। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 3/1111 तथा सहीह अल-जामे 1/407 में सहीह कहा है। दोनों कोषठकों के बीच का भाग इब्न-ए-हिब्बान (मवारिद) से लिया गया है और अलबानी ने उसे सहीह मवारिद अज़-ज़मआन 2/455 में सहीह कहा है।

[5] इमाम बुख़ारी की पुस्तक अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 117 तथा मुसतदरक हाकिम 1/532। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। इसी तरह सुनन नसई हदीस संख्या : 5517। अलबानी ने भी इसे सहीह अल-जामे 1/408 तथा सहीह अन-नसई 3/1118 में सहीह कहा है।

97- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ बुरे दिन से, बुरी रात से, बुरे समय से, बुरे साथी से और स्थायी निवास के बुरे पड़ोसी से।"[2]

98- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत माँगता हूँ और जहन्नम से तेरी शरण में आता हूँ।" (तीन बार)[3]

99- "ऐ अल्लाह! मुझे धर्म की समझ प्रदान कर।"[4]

100- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ इस बात से कि जान-बूझकर किसी को तेरा साझी बनाऊँ और तुझसे क्षमा माँगता हूँ उस शिर्क (बहुदेववादिता) के लिए जो अनजाने में हो जाए।"[5]

101- "ऐ अल्लाह, तूने मुझे जो कुछ सिखाया है, उसको मेरे लिए लाभदायक बना दे और मुझे ऐसी चीजें सिखा, जो मुझे फायदा दें और मेरे ज्ञान में वृद्धि कर।"[6]

102- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लाभकारी ज्ञान, स्वच्छ रोज़ी तथा ग्रहणयोग्य कर्म माँगता हूँ।"[1]

---

[1] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3482 तथा सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1549। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे हदीस संख्या : 1295 तथा सहीह अन-नसई 3/1113 में सहीह कहा है।

[2] इसे तबरानी ने रिवायत किया है और हैसमी ने अज़-ज़वाइद 10/144 में कहा है : "इसके सारे वर्णनकर्ता सहीह के वर्णनकर्ता हैं।" अलबानी ने भी इसे सहीह अल-जामे 1/411 हदीस संख्या: 1290 में हसन कहा है।

[3] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 2572, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3340 तथा सुनन नसई हदीस संख्या : 5536। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 2/319 एवं सहीह सुनन नसई 3/1121 में सहीह कहा है। नसई के शब्द हैं : "जिसने अल्लाह से तीन बार जन्नत माँगी, जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह! इसे जन्नत में दाखिल कर और जिसने तीन बार जहन्नम से अल्लाह की शरण माँगी, जहन्नम कहती है : ऐ अल्लाह! इसे जहन्नम से बचा ले।"

[4] इसका प्रमाण सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम की वह हदीस है, जिसमें अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास -रज़ियल्लाहु अनहुमा- के लिए दुआ की है। देखिए : सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 143 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2477।

[5] मुसनद अहमद 4/403, इब्ने अबू शैबा 10/337 और तबरानी की अल-मोअजम अल-औसत 4/284। अलबानी ने इसे सहीह अत-तरग़ीब व अत-तरहीब 1/19 में हसन कहा है।

[6] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3599 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 259। अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 1/47 में सहीह कहा है।

103- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस बात के आधार पर कि तू अकेला और बेनियाज़ है, न तेरी कोई संतान है और न तू किसी की संतान है और न कोई तेरा समकक्ष है, विनती करता हूँ कि मेरे गुनाहों को क्षमा कर दे। निःसंदेह तू बहुत क्षमा करने वाला और दयालु है।"[2]

104- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस आधार पर विनती करता हूँ कि सारी प्रशंसा तेरे ही लिये है, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है और तू बड़ा उपकारी एवं दाता है। ऐ आकाशों तथा धरती के रचयिता! ऐ प्रताप और सम्मान वाले! जीवित तथा नित्य स्थायी! मैं तुझसे जन्नत माँगता हूँ और जहन्नम से तेरी शरण माँगता हूँ।"[3]

105- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे विनती करता हूँ, क्योंकि मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, बेनियाज़ है, न तेरी कोई संतान है और न तू किसी की संतान है और न कोई तेरा समकक्ष है।"[4]

106- "ऐ मेरे प्रभुरब! मुझे क्षमा कर दे और मेरी तौबा क़बूल कर ले। निश्चय ही तू बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला और क्षमा करने वाला है।"[5]

107- "ऐ अल्लाह! मैं तेरे ग़ैब की बात जानने तथा सृष्टि पर तेरे सामर्थ्य का वास्ता देकर तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे उस समय तक जीवित रख जब तक जीना तेरे ज्ञान के

---

[1] सुनन इब्ने-ए-माजा हदीस संख्या : 925, नसई की अमल अल-यौम व अल-लैलह हदीस संख्या : 102 तथा मुसनद अहमद 6/294 एवं 305। अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 1/152 में सहीह कहा है।

[2] सुनन नसई हदीस संख्या : 1300। उपरोक्त शब्द उसी के हैं। नसई की अस-सुनन अल-कुबरा हदीस संख्या : 7665 और अबू दाऊद हदीस संख्या : 985। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 1/147 में सहीह कहा है।

[3] अबू दाऊद हदीस संख्या : 1495, इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3858, सुनन नसई हदीस संख्या : 1299 तथा सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3544। अलबानी ने इसे सहीह नसई 1/279 तथा सहीह इब्न-ए-माजा 2/329 में सहीह कहा है।

[4] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 985, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3475, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3857 और मुसनद अहमद 5/360। अलबानी ने इसे सहीह सुनन अत-तिरमिज़ी में 3/163 में सहीह कहा है।

[5] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1518 और सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3434। उपरोक्त शब्द सुनन तिरमिज़ी ही के हैं। इसी तरह नसई की अल-कुबरा हदीस संख्या : 10292 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3814। अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 2/321 तथा सहीह तिरमिज़ी 3/153 में सहीह कहा है।

अनुसार मेरे लिए अच्छा हो तथा उस समय मौत दे दे जब तेरे ज्ञान के अनुसार मर जाना ही मेरे लिए अच्छा हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा ऐसा भया माँगता हूँ जो ज़ाहिर एवं बातिन में विद्यमान हो, शांत तथा क्रोधित स्थिति में सत्य बात कहने का सुयोग माँगता हूँ, संपन्नता तथा दरिद्रता जैसी अवस्थाओं में संतुलन माँगता हूँ, ऐसी नेमत माँगता हूँ जो कभी ख़त्म न हो, आँखों की ऐसी ठंडक माँगता हूँ जिसका सिलसिला कभी न टूटे। मैं तेरा निर्णय सामने आने के बाद उससे संतुष्ट रहने का सुयोग माँगता हूँ, मृत्यु के बाद सुखी जीवन माँगता हूँ, तेरे मुखमंडल को देखने का सौभाग्य माँगता हूँ और तुझसे मिलने की अभिलाषा माँगता हूँ। ऐसी अभिलाषा, जिसमें न विनाशकारी हानि हो और न पथभ्रष्ट कर देने वाला फ़ितना। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की शोभा से सुशोभित कर तथा हमें सत्य के मार्ग पर चलने वाला तथा उसका प्रचारक बना।"[1]

108- "ऐ अल्लाह! मुझे अपना तथा उसका प्रेम प्रदान कर, जिसका प्रेम तेरे निकट मेरे लिए लाभकारी हो। ऐ अल्लाह! मुझे तू ने जितनी ऐसी चीज़ें प्रदान की हैं, जो मेरे निकट प्रिय हैं, उन्हें मेरे लिए उन चीज़ों की शक्ति बना दे जो तुझे प्रिय हैं। ऐ अल्लाह! मुझे तूने जितनी ऐसी चीज़ों से वंचित रखा है जो मुझे प्रिय हैं, उन्हें उन चीज़ों में व्यस्त रहने का सबब बना दे जो तुझे प्रिय हैं।"[2]

109- "ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों एवं पापों से पवित्र कर दे। ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से उसी प्रकार से साफ़ कर दे जिस प्रकार से उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे बर्फ़, ओले एवं ठंडे पानी द्वारा पाक-साफ़ कर दे।"[3]

110- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ कंजूसी, कायरता, बुरी आयु, छाती के फ़ितने एवं क़ब्र की यातना से।"[4]

---

[1] सुनन नसई हदीस संख्या : 1305 तथा मुसनद अहमद 4/264। अलबानी ने इसे सहीह सुनन अन-नसई 1/280 तथा 1/282 में सहीह कहा है।

[2] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3491। तिरमिज़ी ने इसे हसन कहा है, जबकि अब्दुल क़ादिर अरनऊत ने कहा है : "उनकी बात सही है।" देखिए जामे अल-उसूल पर उनका शोधकार्य 4/341।

[3] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 476 तथा सुनन नसई हदीस संख्या 400।

[4] सुनन नसई हदीस संख्या : 5469। उसके शब्द हैं : "अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पाँच वस्तुओं से अल्लाह की शरण माँगते थे। कंजूसी, कायरता, बुरी आयु, छाती के फ़ितने तथा क़ब्र की यातना से।" इसे अबू दाऊद ने भी हदीस संख्या : 1539 के तहत रिवायत किया है और अल-अरनऊत ने जामे अल-उसूल के शोध 4/363 में हसन कहा है।

111- "ऐ अल्लाह जिबरील, मीकाईल तथा इसराफ़ील के रब ! मैं तेरी शरण माँगता हूँ जहन्नम की गर्मी तथा क़ब्र की यातना से।"[1]

112- "ऐ अल्लाह! मेरे दिल में मेरे हिस्से की हिदायत डाल दे और मुझे मेरे नफ़्स (आत्मा) की बुराई से अपनी शरण में ले ले।"[2]

113- "ए अल्लाह! मैं तुझसे लाभकारी ज्ञान माँगता हूँ और ऐसे ज्ञान से तेरी शरण माँगता हूँ, जो लाभकारी न हो।"[3]

114- "ऐ अल्लाह! [सातों] आकाशों के स्वामी, धरती के स्वामी, महान अर्श अर्थात सिंहासन के स्वामी, हमारे स्वामी और हर चीज़ के स्वामी, दाने एवं गुठली को फाड़ने वाले और तौरात, इंजील तथा क़ुरआन उतारने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी शरण माँगता हूँ, जिसकी पेशानी को तू पकड़े हुए है। ऐ अल्लाह! तू प्रथम है और तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं है तथा तू आख़िर (अंतिम) है और तेरे बाद कोई चीज़ नहीं है, तू ज़ाहिर (प्रत्यक्ष एवं उच्च) है और तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू बातिन (अप्रत्यक्ष एवं गुप्त) है तथा तुझसे परे कोई चीज़ नहीं है।तू हमारा क़र्ज़ अदा कर दे और हमें निर्धनता से मुक्ति प्रदान कर।"[4]

115- "ऐ अल्लाह! हमारे दिलों को जोड़ दे, हमारे मतभेदों को समाप्त कर दे, हमें शांति के रास्ते दिखा, हमें अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाल दे, हमें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अश्लीलताओं से बचा, हमारे कान, आँख, दिल, पत्नियों एवं संतानों में बरकत दे, हमें क्षमा

---

[1] सुनन नसई हदीस संख्या : 1344, मुसनद अहमद 6/61 तथा बैहक़ी की अद-दावात हदीस संख्या : 109। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 3/1121 तथा सिलसिला सहीहा हदीस संख्या : 1544 में सहीह कहा है।

[2] इसे तिरमिज़ी ने अपनी सुनन 5/519 में हदीस संख्या : 3483 के तहत रिवायत किया है, तथा उपरोक्त शब्द उन्हीं के हैं। अहमद (23/197 हदीस संख्या :19992) तथा हाकिम (1/510) ने भी इसे कुछ इसी के समान रिवायत किया है। मुसनद अहमद (33/197) के शोधकर्ताओं ने अहमद की रिवायत के बारे में कहा है : "इसकी सनद बुख़ारी एवं मुस्लिम की शर्त पर सहीह है...।" जहाँ तक तिरमिज़ी के शब्दों की बात है, तो अलबानी ने उन्हें ज़ईफ़ सुनन तिरमिज़ी पृष्ठ : 379 में ज़ईफ़ कहा है।

[3] नसई की अस-सुनन अल-कुबरा हदीस संख्या : 7867 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3843। अलबानी ने इसे सहीह सुनन इब्न-ए-माजा 2/327 में सहीह कहा है और उसके शब्द हैं : "अल्लाह से लाभकारी ज्ञान माँगों तथा ऐसे ज्ञान से उसकी शरण माँगों, जो लाभकारी न हो।"

[4] इसे इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह (हदीस संख्या: 2713) में अबू हुरैरा -रज़ियल्लाहु अनहु- से रिवायत किया है।

कर कि तू अति क्षमाशील दयावान है तथा हमें अपने अनुग्रहों का आभार व्यक्त करने वाला, उनके कारण तेरी प्रशंसा करने वाला और उन्हें ग्रहण करने वाला बना और उनको हम पर पूरा कर दे।"[1]

116- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अच्छी प्रार्थना, अच्छी दुआ, अच्छी सफलता, अच्छा कर्म, अच्छा प्रतिफल, अच्छा जीवन, अच्छी मृत्यु माँगता हूँ, और इस बात की विनती करता हूँ कि मुझे दृढ़ता प्रदान कर, मेरे मीज़ान (तुला, तराज़ू) को भारी कर दे, मेरे ईमान को सुदृढता एवं वास्तविकता प्रदान कर, मेरा पद ऊँचा कर, मेरी नमाज़ ग्रहण कर और मेरे गुनाह क्षमा कर दे। मैं तुझसे जन्नत की ऊँची श्रेणियाँ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे भलाई का आरंभ, उसका अंत, उसकी संपूर्णता, उसकी शुरूआत, उसका व्यक्त रूप और उसका गुप्त रूप, (-माँगता हूँ-)

और जन्नत की ऊँची श्रेणियाँ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! तू ग्रहण कर। ऐ अल्लाह! मैं जो कुछ लाता हूँ तुझसे उसकी भलाई माँगता हूँ, जो कुछ करता हूँ उसकी भलाई माँगता हूँ, जो कर्म करता हूँ उसकी भलाई माँगता हूँ, जो कुछ छिपा हुआ है उसकी भलाई माँगता हूँ, जो कुछ ज़ाहिर है उसकी भलाई माँगता हूँ और जन्नत की ऊँची श्रेणियाँ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! तू ग्रहण कर। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मेरा ज़िक्र ऊँचा कर दे, मेरे गुनाह क्षमा कर दे, मेरा हाल दुरुस्त कर दे, मेरा दिल पवित्र कर दे, मेरी शर्मगाह की सुरक्षा कर, मेरे दिल को प्रकाशित कर दे, मेरे गुनाह माफ़ कर दे और मैं तुझसे जन्नत की ऊँची श्रेणियाँ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मेरे प्राण में बरकत दे, मेरे कान में बरकत दे, मेरी आँख में बरकत दे, मेरी आत्मा में बरकत दे, मेरी रचना (शरीर) में बरकत दे, मेरे व्यवहार में बरकत दे, मेरे परिवार में बरकत दे, मेरे जीवन में बरकत दे, मेरी मृत्यु में बरकत दे, मेरे कर्म में बरकत दे और मेरी नेकियों को ग्रहण कर तथा तुझसे जन्नत की ऊँची श्रेणियाँ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! तू ग्रहण कर ले।"[2]

---

[1] सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 969 तथा मुसतदरक हाकिम 1/265। उपर्युक्त शब्द मुसतदरक हाकिम के हैं। उन्होंने इसे इमाम मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है और ज़हबी (1/26) ने उनसे सहमति व्यक्त की है जबकि अलबानी ने सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 630 में हसन कहा है।

[2] हाकिम ने इसे अपनी मुसतदरक 1/520 में उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से मरफ़ूअ हदीस के रूप में रिवायत करते हुए सहीह कहा है और ज़हबी (1/520) ने उनसे सहमति व्यक्त की है, जबकि बैहक़ी ने अद-दावात हदीस संख्या : 225 और तबरानी ने अल-कबीर 23/326, हदीस संख्या : 717 में इसे रिवायत किया है।

117- "ऐ अल्लाह! तू मुझे बुरे चरित्र, बुरी इच्छाओं, बुरे कर्म तथा बुरी बीमारियों से बचा।"[1]

118- "ऐ अल्लाह! तूने मुझे जो कुछ प्रदान किया है मुझे उसी पर संतुष्ट रख, मेरे लिए उसमें बरकत दे और मुझे हर अनुपस्थित वस्तु का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर।"[2]

119- "ऐ अल्लाह! मुझसे आसान हिसाब लेना।"[3]

120- "ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी तरह इबादत करने के संबंध में मेरी मदद फ़रमा।"[4]

121- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा ईमान माँगता हूँ जो न जाए, ऐसी नेमत माँगता हूँ जो समाप्त न हो और चिरस्थायी जन्नत की उच्च श्रेणी में मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का साथ माँगता हूँ।"[1]

---

[1] मुसतदरक हाकिम 1/523। हाकिम ने इसे मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है और ज़हबी (1/532) ने उनसे सहमति व्यक्त की है। तथा तबरानी की अल-मोजम अल-कबीर 19/19 हदीस संख्या : 36। अलबानी ने इसे ज़िलाल अल-जन्नत हदीस संख्या : 13 में सहीह कहा है।

[2] मुसतदरक हाकिम 1/532। हाकिम ने इसे इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है तथा सहीह कहा है और ज़हबी 1/510 ने उनसे सहमति व्यक्त की है। बैहक़ी ने भी इसे अल-आदाब हदीस संख्या : 1084 तथा अद-दावात अल-कबीर हदीस संख्या : 211 में रिवायत किया है और हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर ने अल-फ़ुतूहात अर-रब्बानिया 4/383 में हसन कहा है।

[3] मुसनद अहमद 6/48 तथा हाकिम 1/255। हाकिम ने इसे मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है और ज़हबी (1/255) ने उनसे सहमति व्यक्त की है। आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा- कहती हैं : "जब आप नमाज़ पढ़ चुके, तो मैंने कहा :ऐ अल्लाह के रसूल! आसान हिसाब क्या है? तो आपने उत्तर दिया : आसान हिसाब यह है कि अल्लाह उसकी किताब में देखे और उसे क्षमा कर दे। ऐ आइशा! याद रखो कि उस दिन जिससे सख़्ती से हिसाब लिया जाएगा, वह हलाक हो जाएगा। दरअसल मोमिन पर जो भी विपत्ति आती है, उसके द्वारा सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह उसके गुनाहों को मिटा देता है। यहाँ तक कि एक काँटा भी चुभता है, (तो वह भी पाप मोचन का सबब बन जाता है।)" अल्लामा अलबानी ने इस हदीस के बारे में मिशकात अल-मसाबीह में कहा है कि इसकी वर्णन शृंख्ला (सनद) उत्तम (जय्यिद) है।

[4] मुसनद अहमद 2/299 तथा मुसतदरक हाकिम 1/499। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। दोनों की बात सही भी है। यह हदीस सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1524 तथा नसई की अल-कुबरा हदीस संख्या : 9973 में भी है और अलबानी ने इसे सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 534 में सहीह कहा है।

122- "ऐ अल्लाह! मुझे अपनी आत्मा की बुराई से बचा और मुझे हिदायत के उच्च मापदंड पर क़ायम रख। ऐ अल्लाह! मेरे उन सभी गुनाहों को क्षमा कर दे जो मैंने छिपाकर किए हैं एवं जो मैंने घोषित तरीके से किए हैं, जो मैंने गलती से किए हैं और जो मैंने जान-बूझकर किए हैं तथा जिनको मैं जानता हूँ और जिनको मैं नहीं जानता।"[2]

123- "ऐ अल्लाह, ऋण के बोझ तथा शत्रुओं के हावी होने और दुश्मनों के हँसने से, मैं तेरी शरण में आता हूँ।"[3]

124- "ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर, मेरा मार्गदर्शन कर, मुझे आजीविका प्रदान कर और मुझे सुरक्षित रख। मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ क़यामत के दिन खड़े होने की तंगी से।"[4]

125- "ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कान एवं आँख से लाभान्वित होने का अवसर दे, उन दोनों को मेरा उत्तराधिकारी बना, मुझे पर अत्याचार करने वाले के विरुद्ध मेरी मदद कर और उससे मेरा बदला ले।"[5]

---

[1] इसे इब्न-ए-हिब्बान (मवारिद -के अनुसार-) ने पृष्ठ : 604 में हदीस संख्या : 2436 के तहत अब्दुल्लाह बिन मसऊद -रज़ियल्लाहु अनहु- से, उनके कथन के रूप में, रिवायत किया है। जबकि अहमद (1/386, 400) ने इसे एक अन्य सनद से रिवायत किया है। इसी तरह नसई ने भी अमल अल-यौम व अल-लैलह हदीस संख्या : 879 में रिवायत किया है और अलबानी ने सिलसिला सहीहा में हदीस संख्या : 2301 के तहत हसन कहा है।

[2] नसई की अल-कुबरा 6/246, हदीस संख्या : 10830 तथा मुसतदरक हाकिम 1/510। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। इसी तरह मुसनद अहमद 4/444 तथा गवेषित मुसनद (अहमद) 33/197, हदीस संख्या : 19992। हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर अपनी पुस्तक अल-इसाबा में कहते हैं कि इसकी सनद सहीह है और अलबानी ने रियाज़ अस-सालेहीन की हदीसों को संदर्भित करते समय हदीस संख्या : 1495 पर नोट चढ़ाते हुए इसे सहीह कहा है।

[3] सुनन नसई हदीस संख्या : 5475 तथा मुसनद अहमद 2/173। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 3/1113 में सहीह कहा है।

[4] सुनन नसई हदीस संख्या : 1617 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1356। अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 1/356 तथा सहीह सुनन इब्न-ए-माजा 1/226 में सहीह कहा है।

[5] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3681, इमाम बुख़ारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 650 और मुसतदरक हाकिम 1/523। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है और अलबानी ने सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/188 में हसन कहा है।

126- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे स्वच्छ जीवन, संतुलित मृत्यु और आख़िरत की ओर ऐसी वापसी माँगता हूँ, जो अपमानजनक एवं अनादर करने वाली न हो।[1]127- "ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरे ही लिये है। ऐ अल्लाह! जिसे तू फैलाए उसे कोई संकुचित करने वाला नहीं है और जिसे तू संकुचित करे उसे कोई फैलाने वाला नहीं है। जिसे तू पथभ्रष्ट करे उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है और जिसे तू मार्ग दिखाए उसे कोई पथभ्रष्ट करने वाला नहीं है। जिस चीज़ को तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं है और जिस चीज़ को तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं है। जिसे तू दूर करे उसे कोई निकट करने वाला नहीं है और जिसे तू निकट करे उसे कोई दूर करने वाला नहीं है। ऐ अल्लाह! हमें अपनी बरकतें, कृपा, अनुग्रह एवं आजीविका प्रदान कर। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ऐसी स्थायी नेमत माँगता हूँ जो परिवर्तित एवं समाप्त न हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दरिद्रता के समय नेमत माँगता हूँ और भय के समय शांति माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं उन तमाम वस्तुओं की बुराई से तेरी शरण माँगता हूँ जो तू ने हमें प्रदान की हैं तथा उन तमाम वस्तुओं की बुराई से जिनसे तू ने हमें वंचित रखा है। ऐ अल्लाह! हमारे निकट ईमान को प्रिय बना दे और उसे हमारे दिलों में सजा दे तथा हमारे निकट अविश्वास, पाप एवं अवज्ञा को अप्रिय बना दे और हमें सुपथ पर चलने वाले लोगों में से बना दे। ऐ अल्लाह! हमें इस्लाम के साथ मृत्यु दे और इस्लाम के साथ जीवित रख और सदाचारी लोगों के साथ इस तरह मिलने का अवसर दे कि न हम अपमानित हों और न फ़ितने में पड़े हुए हों। ऐ अल्लाह! उन अविश्वासियों का वध कर, जो तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरे मार्ग से रोकते हैं और उन्हें अपनी यातना का मुँह दिखा। ऐ अल्लाह! उन अविश्वासियों का भी वध कर, जिन्हें किताब दी गई है। ऐ सत्य पूज्य! [तू ग्रहण कर।]"

128- "ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा प्रदान कर, मुझपर दया कर, मुझे सत्य का मार्ग दिखा, मुझे हर विपत्ति से सुरक्षित रख और मुझे रोज़ी प्रदान कर।"[2]

---

[1] इसे अहमद ने इन्हीं शब्दों के साथ रिवायत किया है। देखिए मुसनद अहमद 3/424 तथा 24/246 हदीस संख्या : 15492। दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग मुसतदरक हाकिम 1/507 तथा 3/23-24 का है। इसे बुख़ारी ने भी अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 699 में रिवायत किया है, और अलबानी ने फ़िक़्ह अस-सीरह की हदीसों को संदर्भित करते समय उसके पृष्ठ : 284 तथा इमाम बुख़ारी की सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 538 पृष्ठ : 259 में सहीह कहा है और मुसनद 24/246 के शोधकर्ताओं ने कहा है कि इसके सारे वर्णनकर्ता स़िक़ात अर्थात विश्वस्त हैं।

[2] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2696 तथा 2697। मुस्लिम की एक रिवायत में है : "ये शब्द तेरे लिए तेरी दुनिया एवं आख़िरत को एकत्र कर देंगे।" जबकि सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 850 में है : "जब

"... मेरी आवश्यकता पुरी कर एवं मेरे नुकसान की भरपाई कर और मुझे ऊँचा कर।"[1]

129- "ऐ अल्लाह! हमें अधिक प्रदान करता जा और कोई कमी न होने दे, हमें सम्मान प्रदान कर और अपमान का मुँह न दिखा, हमें देता जा और वंचित न रख, हमें प्राथमिकता दे और हम पर किसी को प्राथमिकता न दे तथा हमें संतुष्ट रख एवं हमसे भी संतुष्ट रह।"[2]

130- "ऐ अल्लाह! तू ने मेरी रचना सुंदर तरीके से की है, अतः मेरे व्यवहार को सुंदर बना।"[3]

131- "ऐ अल्लाह! मुझे सुदृढ़ रख और सत्य का मार्ग दिखाने वाला और उसपर चलने वाला बना।"[4]

132- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे कार्य में दृढ़ता तथा सत्य की निष्ठा माँगता हूँ, मैं तुझसे तेरी दया को अनिवार्य करने वाली चीज़ें माँगता हूँ, मैं तुझसे ऐसे कार्यों का सुयोग माँगता हूँ जो तेरी क्षमा का कारण बनते हों, मैं तुझसे तेरी नेमत का शुक्र अदा करने तथा अच्छी उपासना का सुयोग माँगता हूँ, मैं तुझसे स्वच्छ हृदय एवं सच्ची ज़बान माँगता हूँ, मैं तुझसे वह सारी भलाइयाँ माँगता हूँ जिन्हें तू जानता है और उन सारी बुराइयों से तेरी शरण माँगता हूँ

वह देहाती जाने लगा, तो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : इसने अपने दोनों हाथों को भलाइयों से भर लिया है।"

[1] देखिए : सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 284 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 898। अलबानी ने इसे सहीह सुनन इब्न माजा 1/148 तथा सहीह सुनन तिरमिज़ी 1/90 में सहीह कहा है।

[2] सुनन तिरमिज़ी 5/326 हदीस संख्या : 3173 तथा मुसतदरक हाकिम 2/98। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और शैख़ अब्दुल क़ादिर अरनऊत ने जामे अल-उसूल के शोध 11/282, हदीस संख्या : 8847 में हसन कहा है।

[3] मुसनद अहमद 6/68 तथा 155 एवं 1/403 इब्न-ए-हिब्बान (हदीस संख्या : 2423), तयालिसी हदीस संख्या : 374 तथा मुसनद अबू याला हदीस संख्या : 5075। अलबानी ने इसे इरवा अल-ग़लील 1/115 हदीस संख्या : 74 में सहीह कहा है।

[4] इसका प्रमाण अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की एक दुआ है, जो आपने जरीर -रज़ियल्लाहु अनहु- के लिए की थी। देखिए : सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6333 और इसी तरह हदीस संख्या : 3020 एवं 3036 आदि।

जिन्हें तू जानता है और तुझसे उन सारे गुनाहों से क्षमा माँगता हूँ जिन्हें तू जानता है। निश्चय ही तू ग़ैब की सारी बातों को अच्छी तरह जानता है।"[1]

133- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत की सबसे उच्च श्रेणी फ़िरदौस माँगता हूँ।"[2]

134- "ऐ अल्लाह! मेरे दिल में ईमान को नया रख।"[3]

135- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ ऐसी नमाज़ से जो लाभकारी न हो।"[4]

136- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ बुरे पड़ोसी से, ऐसी पत्नी से जो मुझे बुढ़ापे से पहले बूढ़ा बना दे, ऐसी संतान से जो मेरा अधिपति बन जाए, ऐसे धन से जो मेरे लिए यातना बन जाए, ऐसे धूर्त मित्र से जिसकी आँखें मुझे देख रही हों और जिसका दिल

---

[1] मुसनद अहमद 28/338 हदीस संख्या : 17114 तथा 28/356 हदीस संख्या : 17133, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3407 तथा तबरानी की अल-मोजम अल-कबीर हदीस संख्या : 7135, 7157, 7175, 7176, 7177, 7178, 7179, 7180। उपरोक्त शब्द तबरानी के हैं। इसे इब्न-ए-हिब्बान ने भी अपनी सहीह 3/215 हदीस संख्या : 935 तथा 5/310 हदीस संख्या : 1974 में रिवायत किया है और शोऐब अरनऊत ने सहीह इब्न-ए-हिब्बान 5/312 में हसन कहा है और मुसनद (28/338) के शोधकर्ताओं ने भी इसकी विभिन्न वर्णन शृंख्लाओं के कारण इसे हसन कहा है। जबकि अलबानी ने इसे सिलसिला सहीहा के सातवें खंड हदीस संख्या : 3228 में तथा सहीह मवारिद अज़-ज़मआन हदीस संख्या : 2416 एवं 2418 में ज़िक्र किया है और इसकी विभिन्न वर्णन शृंख्लाओं के आधार पर सहीह लिग़ैरिहि कहा है।

[2] यह दुआ अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के इस कथन से ली गई है : "...अतः जब तुम अल्लाह से माँगो तो उससे फ़िरदौस माँगो, क्योंकि वह जन्नत की सबसे उत्तम एवं उच्च श्रेणी है, उसके ऊपर कृपावान अल्लाह का सिंहासन है और वहीं से जन्नत की नहरें निकलती हैं।" सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 2790 तथा 7423।

[3] यह दुआ अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की उस हदीस से ली गई है जिसे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने रिवायत किया है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "निश्चय ही ईमान तुम्हारे दिल में उसी तरह पुराना हो जाता है, जिस तरह पुराना कपड़ा पुराना हो जाता है। अतः अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हारे दिल में ईमान को नया रखे।" मुसतदरक हाकिम 1/4। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है, जबकि हैसमी ने मजमा अज़-ज़वाइद 1/52 में कहा है : "इसे तबरानी ने अल-कबीर में रिवायत किया है और इसकी सनद हसन है।" इसी तरह अलबानी ने भी इसे सिलसिला सहीहा 4/113 हदीस संख्या : 1585 में हसन कहा है।

[4] अबू दाऊद हदीस संख्या : 1549। अलबानी ने सहीह सुनन अबू दाऊद 1/424 में इसे सहीह कहा है।

मेरी जासूसी कर रहा हो, यदि कोई अच्छी बात देखे तो उसे दफ़न कर दे और यदि कोई बुरी बात देखे तो उसको फैलाता फिरे।[1]

137- "ऐ अल्लाह! मुझे क़यामत के दिन अपमानित न करना।"[2]

138- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया एवं आख़िरत में शांति एवं सुरक्षा माँगता हूँ।"[3]

139- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ ऐसे ज्ञान से जो लाभकारी न हो, ऐसे कर्म से जो उठाया न जाए, ऐसे दिल से जो भय न करता हो और ऐसी बात से जो सुनी न जाए।"[4]

140- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ चिंता तथा शोक से, विवशता तथा सुस्ती से, कंजूसी तथा कायरता से और क़र्ज़ के बोझ तथा लोगों के वर्चस्व से।"[5]

141- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ जहन्नम की यातना से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ क़ब्र की यातना से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ सारे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष फ़ितनों से और मैं तेरी शरण माँगता हूँ दज्जाल के फ़ितने से।"[6]

142- "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे मार्ग में शहादत माँगता हूँ।"[1]

---

[1] तबरानी की अद-दुआ 3/1425, हदीस संख्या : 1339। अलबानी सिलसिला सहीहा 7/377 हदीस संख्या : 3137 में कहते हैं : "मैं कहता हूँ : यह एक जय्यिद (उत्तम) सनद है और इसके सारे वर्णनकर्ता अत-तहज़ीब में उल्लिखित वर्णनकर्ता है।"

[2] मुसनद अहमद 29/596 हदीस संख्या : 18056। मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह कहा है। इसे तबरानी ने भी अल-मोजम अल-कबीर 3/20 हदीस संख्या : 2524 में इन शब्दों के साथ रिवायत किया है : "ऐ अल्लाह! मुझे क़यामत के दिन अपमानित न करना तथा मुझे कठिनाई के दिन अपमानित न करना।"

[3] सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3851। अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 3/259 और सिलसिला सहीहा हदीस संख्या : 1138 में सहीह कहा है।

[4] इब्न हिब्बान हदीस संख्या : 2440 (मवारिद)। अलबानी ने इसे सहीह मवारिद अज़-ज़मआन 2/454 हदीस संख्या : 2066 में सहीह कहा है।

[5] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 6363। अनस -रज़ियल्लाहु अनहु- कहते हैं : "अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब भी घर पर होते तो मैं आपकी सेवा करता था। इस दौरान मैं सुनता कि आप अकसर यह दुआ किया करते थे : "ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ..."।

[6] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2867। तथा उसमें है : "अल्लाह की शरण माँगों जहन्नम की यातना से" ..., [अल्लाह की शरण माँगो क़ब्र की यातना से...] अंत तक।

143- "ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे। ऐ अल्लाह! मुझे क़यामत के दिन अपने पैदा किए हुए बहुत-से लोगों से ऊपर रखना। ऐ अल्लाह! मेरे लिये, मेरे गुनाह क्षमा कर दे और क़यामत के दिन सम्मानित स्थान में प्रवेश दे।"[2]

144- "ऐ अल्लाह! जिन लोगों को तू ने हिदायत दी है उन के संग मुझे भी हिदायत दे, जिन लोगों को तू ने आफियत दी है उनके संग मुझे भी आफियत दे, जिनको तू ने अपना मित्र बनाया है उनके संग मुझे भी अपना मित्र बना, जो कुछ तू ने हमें दे रखा है उसमें बरकत प्रदान कर, और जो फैसला तू ने कर रखा है उसकी बुराई से हमें बचाए रख, (क्योंकि) जिसको तू अपना मित्र बना ले उसे कोई अपमानित नहीं कर सकता। हे हमारे रब! तू बरकत वाला तथा महान है।"[3]

145- "ऐ मेरे रब! मेरे लिये बदले के दिन मेरे गुनाह माफ़ कर देना।"[4]

146- "मैं महान अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ, जिसके सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं, जो जीवंत है,नित्य स्थायी तथा सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, और मैं उसी की ओर लौटता हूँ।"[5]

---

[1] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 1909। यह दुआ अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के इस कथन से ली गई है : "जिसने सच्चे दिल से अल्लाह से शहादत माँगी, उसे अल्लाह शहीदों का स्थान प्रदान करेगा, चाहे वह बिस्तर पर ही क्यों न मरे।"

[2] सहीह बुख़ारी हदीस संख्या : 4323 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 2498। यह दुआ उस दुआ से ली गई है, जो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने उबैद अबू आमिर के लिए तथा अबू बुर्दा -रज़ियल्लाहु अनहुमा- के लिए की थी।

[3] मुसनद अहमद 3/249 हदीस संख्या : 1723। मुसनद (3/249) के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह कहा है। यह एक आम रिवायत है और इसमें एक अन्य रिवायत की तरह वित्र की बंदिश नहीं है। इस रिवायत में है कि अनस -रज़ियल्लाहु अनहा- ने कहा है : "आप हमें यह दुआ सिखाया करते थे ...।"

[4] सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 214। अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! इब्ने जुदआन अज्ञानता काल का एक व्यक्ति था, जो रिश्तेदारों का हक़ अदा करता था और निर्धनों को खाना खिलाता था, तो क्या उसे इसका लाभ होगा? आपने उत्तर दिया : "उसे इसका कोई लाभ नहीं होगा। उसने कभी नहीं कहा था कि ऐ मेरे रब ! मेरे लिये, मेरे गुनाह को बदले के दिन माफ़ कर देना।"

[5] सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3577। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/469 में सहीह कहा है: "जिसने यह दुआ पढ़ी उसे क्षमा कर दिया जाएगा, यद्यपि वह युद्ध के मैदान से भागा हुआ ही क्यों न हो।"

147- "ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ कर दे, मेरे दिल का क्रोध दूर कर दे और पथभ्रष्ट कर देने वाले फ़ितनों से बचा।"[1]

148- "ऐ अल्लाह! मुझे अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सुन्नत पर जीवित रख, आपके धर्म पर ही मौत दे और पथभ्रष्ट कर देने वाले फ़ितनों से बचा।"[2]

---

[1] यह दुआ दरअसल अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की उस दुआ से ली गई है, जो आपने आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा- के लिए की थी : "ऐ अल्लाह! इसके गुनाह माफ़ कर दे, इसके दिल का क्रोध ख़त्म कर दे और इसे पथभ्रष्ट कर देने वाले फ़ितनों से बचा।" इसे इब्न-ए-असाकिर ने अपनी किताब "अल-अरबईन फ़ी मनाक़िब उम्महात अल-मोमिनीन" पृष्ठ : 85 में अपनी सनद से आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा- से रिवायत किया है और इसके बाद कहा है : "यह हदीस, बक़िय्या बिन वलीद की हदीस से सहीह हसन है।" इसे इब्न अस-सुन्नी ने भी अमल अल-यौम व अल-लैला हदीस संख्या : 457 में कुछ इसी तरह रिवायत किया है। जबकि इब्न अस-सुन्नी की एक अन्य प्रति में "पथभ्रष्ट कर देने वाले फ़ितनों से बचा" के स्थान पर है : "तथा मुझे शैतान से बचा।" इसकी तख़रीज आप अलबानी के यहाँ अज़-ज़ईफ़ा हदीस संख्या : 4207 में देख सकते हैं। इसका एक शाहिद उम्म-ए-सलमा -रज़ियल्लाहु अनहा- से इसी की भाँति मुसनद अहमद 44/2 हदीस संख्या : 26576 में है। उसके शब्द हैं : "तुम कहो : ऐ अल्लाह, नबी मुहम्मद के प्रभु! मेरे गुनाह माफ़ कर दे, मेरे दिल का क्रोध ख़त्म कर दे और मुझे जब तक जीवित रख पथभ्रष्ट करने देने वाले फ़ितनों से बचाए रख।" इसे हैसमी ने मजमा अज़-ज़वाइद 10/27 में हसन कहा है। यह हदीस तबरानी की अल-मोजम अल-कबीर 23/338 हदीस संख्या : 785 में भी है, लेकिन उसमें "जब तक हमें जीवित रख" के शब्द नहीं हैं। इसी तरह इसका एक शाहिद उम्म-ए-हानी -रज़ियल्लाहु अनहा- से भी वर्णित है। उसमें है कि उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसी दुआ सिखाइए, जो मैं किया करूँ। तो आपने कहा : "तुम कहो : ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ कर दे...।" इसे ख़राइती ने एतिलाल अल-कुलूब हदीस संख्या : 52 और मसावी अल-अख़लाक़ हदीस संख्या : 323 में रिवायत किया है।

[2] इसे बैहक़ी ने अल-कुबरा 5/95 में अब्दुल्लाह बिन उमर -रज़ियल्लाहु अनहुमा- की दुआ के रूप में (मौक़ूफ़) नक़ल किया है। इसे इब्न अल-मुलक़्क़िन ने अल-बद्र अल-मुनीर 6/309 में नक़ल किया है और ज़िया मक़दसी से नक़ल करते हुए कहा है कि इसकी सनद जय्यिद (उत्तम) है। जबकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद -रज़ियल्लाहु अनहु- ने कहा है : "तुममें से कोई यह न कहे : ऐ अल्लाह, मैं फ़ितने से तेरी शरण माँगता हूँ। क्योंकि तुम में से हर व्यक्ति के अंदर फ़ितना पाया जाता है। स्वयं अल्लाह ने कहा है : {निश्चय ही तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान फ़ितना हैं।} [अत-तग़ाबुन : 15] अतः तुममें से जिसे शरण माँगनी हो, वह पथभ्रष्ट कर देने वाले फ़ितनों से शरण माँगे।" इसे इब्न-ए-जरीर ने अपनी तफ़सीर 13/475 में हदीस संख्या : 15912 के तहत रिवायत किया है और इब्न-ए-बत्ताल ने अपनी लिखी हुई सहीह बुख़ारी की शर्ह 4/13 में इसे ज़िक्र किया है।

149- "हे अल्लाह! मुहम्मद एवं उनकी संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा कर, जिस प्रकार से तू ने इबराहीम एवं उनकी संतान-संतति की प्रशंसा की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद तथा उनकी संतान-संतति पर उसी प्रकार से बरकतों की बारिश कर, जिस प्रकार से तू ने इबराहीम एवं उनकी संतान-संतति पर [सारे संसार में] बरकत उतारी है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है।"[1]

सभी प्रशंसा, अल्लाह, सर्वलोक के रब के लिए, उसके प्रताप और विराट राज्य के अनुरूप है। ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, आपकी संतान-संतति, साथियों एवं क़यामत के दिन तक अछाई के साथ आपका अनुसरण करने वालों पर कृपा एवं शांति की बरखा बरसा।

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 3370। दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग अबू हुरैरा -रज़ियल्लाहु अनहु- की हदीस से लिया गया है, जो सहीह मुस्लिम (हदीस संख्या : 405) में है।

विषय सूचि

भूमिका 4
दुआ की फ़ज़ीलत 5
दुआ के शिष्टाचार और (अल्लाह के निकट) उस के स्वीकार्य होने में सहायक वस्तुएँ: 7
क़ुरआन एवं हदीस से दुआएँ 12
विषय सूचि 42